ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 41-42
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

बन्दीगृह में कैदियों का सामंजस्य

नीति सिंह

शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया (बिहार) भारत

Received- 18.04. 2019, Revised- 20.04. 2019, Accepted - 28.04.2019 E-mail: dr.ramnyadav@gmail.com

सारांश : *कारागार समुदाय या बन्दीगृह समुदाय का प्रथम व्यवस्थित समाजशास्त्रीय अध्ययन डोनाल्ड, क्लेमर ने अपनी पुस्तक 'दी प्रिजन कम्युनिटी' 1940 में किया है। उनका मानना है कि कारागार सेवा का ऐसा क्षेत्र है जो एक निश्चित परिधि में अपना कार्य सम्पादित करता रहता है। कारागार में रहने वाले बन्दीजन अपनी सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, भौतिक तथा आपराधिक मनोवृत्ति के आधार पर एक दूसरे से बहुत अधिक समरूप होते हैं तथा उनमें 'हम की भावना' पायी जाती है। 'हम की भावना' की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा की बन्दी समाज सम्मिलित रूप से उन अभिरूचियों को प्रकट करता है, जिसमें उनकी एकता तथा 'हम की भावना' बढ़ती रही है। उनके आपस में होने वाले झगड़ें, भेदभाव, वैमनस्य तथा प्रतिस्पर्द्धा की भावनाएँ उनकी सामुदायिक एकता की भावना को समाप्त नहीं कर पाती है।*

कुंजी शब्द – कारागार समुदाय, बन्दीगृह समुदाय, परिधि, अभिरूचियों, भेदभाव, वैमनस्य, प्रतिस्पर्द्धा, बन्दीसमाज

क्लेमर का मानना है कि बन्दीगृह के अन्तर्गत बन्दी समाज की अपनी एक विशेष संस्कृति होती है, यहाँ तक कि इसकी एक विशेष भाषा होती है। उन्होंने यह भी स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि स्वयं बन्दीजन बन्दी समाज के अन्तर्गत अनौपचारिक समूहों के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं। उन्होंने अमेरिका में इलीनोइस में एक अधिकतम सुरक्षित कारागार में रहने वाले बन्दियों के अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट किया है कि अध्ययन में सम्मिलित किये गये बन्दियों के निदर्शन में 42 प्रतिशत बन्दियों ने यह बताया कि वे 'अवर्गीकृत' श्रेणी के बन्दी हैं, जबकि 41 प्रतिशत बन्दियों ने अपने को प्राथमिक समूह (निकटस्थ, अन्तरंग, अनौपचारिक) से सम्बद्ध बताया। स्पष्टतया क्लेमर की उपकल्पना थी कि कारावास अवधि बढ़ने के साथ बन्दी समाज में बन्दियों का प्राथमिक समूहों के साथ तादात्म्य या एकात्मकता का ह्रास होता है।

क्लेमर ने अपने अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट किया कि वे बन्दी जिन्होंने अपने को 'अवर्गीकृत' श्रेणी का सदस्य बताया तथा किसी अनौपचारिक बन्दी समूह से पृथक बताया–

(i) उनका परिवार एवं बाहरी मित्रों से अत्यन्त घनिष्ट सम्बन्ध था।

(ii) वे इस प्रकार के बन्दी थे जिनके साथ अन्य बन्दीजन साहचर्य स्थापित करना नहीं चाहते थे तथा

(iii) वे एक अजनबी जैसा सम्बन्ध बनाये हुए थे तथा अन्य बन्दियों के साथ भी किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखना चाहते थे।

अतः क्लेमर ने बन्दी समाज के अन्तर्गत बन्दीकरण की प्रक्रिया का आत्मसात्मीकरण की प्रक्रिया से तादात्म्य स्थापित करते हुए यह दर्शाया है कि बन्दी समुदाय में यह प्रक्रिया आत्मसात्मीकरण की प्रक्रिया के समान है जिसके द्वारा बन्दी समुदाय के आदर्श, मूल्य, मानदण्ड तथा अभिवृत्तियाँ आन्तरीकृत कर ली जाती है एवं बन्दी समाज का एक अंग बन जाता है।

बन्दीगृह में कैदियों के समायोजन प्रतिमान का अपराधशास्त्रियों ने दो दृष्टिकोणों से अध्ययन किया हैः मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण। मोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से अध्ययन करने वाले अपराधशास्त्रियों ने बन्दियों की बुद्धि एवं व्यक्तित्व सम्बन्धी लक्षणों के आधार पर समायोजन प्रक्रिया का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। इसके विपरीत, समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन करने वाले समाजशास्त्रियों ने बन्दियों के विभिन्न सामाजिक विभेदों, वैवाहिक स्थिति, बन्दीगृह में आने से पूर्व कार्य प्रकृति, बन्दीगृह के अन्दर बन्दियों के पारस्परिक सम्बन्धों की अनौपचारिक संरचना, इत्यादि के आधार पर समायोजन प्रक्रिया का अध्ययन किया है।

समूह सर्वव्यापी होते हैं। व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किसी न किसी समूह का सदस्य अवश्य बनता है क्योंकि इसके बिना वह जीवन व्यतीत नहीं कर सकता है। सामाजिक समूह में व्यक्ति में हम की भावना, मित्रता की अनुभूति, वफादारी, एकात्मकता के साथ–साथ अरूचि, नापसंदी, नफरत, स्पर्धा, हिंसा, भय, घृणा, परिहार, बचाव तथा विरक्त आदि की भावना पायी जाती है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति के समक्ष नकारात्मक मनोवृति उत्पन्न होती है। वह समाज या समूह के व्यक्तियों के साथ असहज महसूस करने लगता है। समायोजन का अभाव उत्पन्न हो जाता है। समायोजन के अभाव में वह

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

अपने आपको समाज से कटा हुआ महसूस करता है। फलस्वरूप वह सामाजिक नियमों, मूल्यों, मानदंडों आदि का उल्लंघन करने लगता है। वह समाज में अशांति उत्पन्न करने लगता है। अतः ऐसे समाज विरोधी आचरण करने वाले लोगों को चिन्हित कर राज्य न्यायिक प्रक्रिया के तहत जेल में डाल देता है तथा उसे सुधारने का प्रयास करता है ताकि वह फिर से एक सामाजिक प्राणी बन सके तथा समाज के सदस्यों के साथ पुनः समायोजन एवं तालमेल बैठा सके। बन्दीगृह में बन्दियों को बन्दीगृह के मूल्यों, मानदंडों आदि का पालन करना पड़ता है, उसके साथ जो सामंजस्य स्थापित करता है। बन्दीगृह समायोजन कहा जाता है।

अपराधी व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र की मुख्य धारा से पृथक हो जाता है। अपराधियों का एक अलग समूह बन जाता है जिसमें बुराइयाँ ही बुराइयाँ होती है। अतः उनकी बुराइयों को दूर करने के लिए जेल में रखकर अच्छे नागरिक बनने की सीख जाती है तथा समाज कल्याण के विरूद्ध होने पर उन्हें कठोर दंड भी दिया आता है? इन समस्त प्रक्रियाओं के बीच व्यक्ति का सामंजस्य स्थापित करना ही सामाजिक समायोजन कहलाता है।

चूंकि, जेल में बन्दियों को बन्दीगृह के नियमों, मूल्यों, मानदंडों आदि का पालन करने के लिए प्रेरित एवं विवश किया जाता है। फलस्वरूप धीरे–धीरे कैदी बन्दीगृह की विभिन्न परिस्थितियों से तथा कैदियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने लगता है या कर लेता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के नाते अपने समस्त दैनिक आवश्यकताओं को समाज में रहकर ही प्राप्त करता है। प्रत्येक समाज के नियम, मूल्य, आदर्श प्रतिमान सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं अर्थात् इन बातों की प्रेरणा व्यक्ति को समाज के माध्यम से मिलती है जो कुछ भी व्यक्ति को कार्य करने के लिए उत्तेजित करती है या उस पर दबाव डालती है वह प्रेरणा है। दूसरे शब्दों में किसी भी उत्तेजक को प्रेरणा कहा जा सकता है। यह उत्तेजक कोई बाहरी चीज भी हो सकती है और आन्तरिक भी। अन्य शब्दों में कोई भी बाहरी या आन्तरिक उत्तेजक जो व्यक्ति पर कार्य करने के लिए दबाव डालता है, प्रेरणा है। प्रत्येक समाज की अपनी संस्कृति होती है जो व्यक्ति के व्यवहारों को निर्धारित करता है तथा उसे सामाजिक मूल्यों के अनुसार व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है। लेकिन समाज में कुछ ऐसे व्यक्ति भी होते हैं जो सामाजिक मूल्यों की परवाह नहीं करते तथा मनमाना व्यवहार करने लगते हैं। जब व्यक्ति द्वारा किया गया कार्य या व्यवहार समाज के लिए खतरा बन जाता है तो ऐसी स्थिति में सामाजिक एवं वैधानिक दबाव का उपयोग किया जाता है। फलतः सामाजिक एवं वैधानिक स्वतंत्रता एवं दबाव के मध्य व्यक्ति जीवन व्यतीत करने लगता है तथा वह कुछ स्वयं का आदर्श भी रखता है। ये उसका स्वयं आदर्श कोई व्यक्ति, संस्था के नियम, धर्म, भाषण संस्कृति आदि हो सकती है, से व्यक्ति अनुकरण करता रहता है। इन आदर्श प्रतीकों से उसे जो अनुभूति प्राप्त होती है वह अनुभूति ही उसके लिए प्रेरक का काम करती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Samuel M. Strong : Social type in minority group, American Journal of Sociology, March, 1943.
2. Clarence Schrag: Leadership among prison inmates, American Sociological Review, February 1954
3. Gresham M. Sykes and Sheldon Messinger: Inmate Social System, in crime and Justice, (ed.) by Radzinowiz and Wolfgang, vol.III, Basic Books, Inc. Publishers, Newyork, 1971.
4. Donald Clemer : The prison community, Holt Rinehart and Winston, Newyork, 1960.

*****